जी डी गोयनका पब्लिक स्कूल

कक्षा:नौवी (9th) **विषय:हिंदी व्याकरण** **प्रसंग: – वाक्य**

परिचय :

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह समाज में दूसरों से जुड़ा रहता है। वह दूसरों से बातचीत करने के लिए भाषा का प्रयोग करता है। इसके लिए वह ध्वनियाँ निकालता है। इन्हीं ध्वनियों का सार्थक समूह शब्द और वाक्य का रूप ले लेते हैं। वह प्रायः वाक्यों के रूप में अपनी बातें कहता है।

परिभाषा :

सार्थक शब्दों का वह व्यवस्थित समूह जिनके माध्यम से मन के भाव-विचार प्रकट किए जाते हैं, उन्हें वाक्य कहते हैं।

उदाहरण – पक्षी गीत गाते हैं।

वसंत ऋतु आते ही फूल खिल जाते हैं।

फैक्ट्रियाँ लगने से प्रदूषण बढ़ गया है।

उपर्युक्त वाक्य सार्थक शब्दों का वह व्यवस्थित समूह है जिनसे भाव-विचारों की पूरी अभिव्यक्ति हो रही है।

वाक्य के तत्ववाक्य से भाव-विचारों की भलीभाँति अभिव्यक्ति हो, इसके लिए वाक्य में निम्नलिखित तत्व होने चाहिए –

1. सार्थकता – वाक्य की रचना सार्थक शब्द समूह द्वारा की जाती है ताकि वाक्य से उचित अर्थ की अभिव्यक्ति हो सके; जैसे –

- **प्रातः होते ही पक्षी कलरव करने लगे।**
- **सालभर मेहनत करने के कारण ही वह कक्षा में प्रथम आया।**

  कभी-कभी निरर्थक शब्द भी वाक्य में प्रयुक्त होकर अर्थ का बोध कराने लगते हैं, जैसे
- **सुमन, इस भिखारी को कुछ खाना-वाना दे देना।**
- **ये गौरैयाँ कब से बक-झक किए जा रही हैं।**

2. आकांक्षा – किसी वाक्य के एक पद को सुनकर अन्य आवश्यक पद को सुनने या जानने की जो उत्कंठा प्रकट होती है, उसे आकांक्षा कहते हैं; जैसे – मैदान में खेल रहे हैं।

यह वाक्य सुनते ही हमारे मन में प्रश्न उठता है- मैदान में कौन खेल रहे हैं? हमें इसका उत्तर मिलता है –

लड़के मैदान में खेल रहे हैं।

यहाँ 'लड़के' शब्द जोड़ देने से वाक्य पूरा हो गया। इससे पहले वाक्य को 'लड़के' शब्द की आकांक्षा थी जिसके जुड़ते ही यह आकांक्षा समाप्त हो गई।

3. योग्यता – वाक्य में प्रयुक्त प्रत्येक शब्द (पद) प्रसंगानुरूप अर्थ प्रदान करता है। इसे ही योग्यता कहते हैं।
जैसे – किसान कुदाल से खेत जोतता है।
इस वाक्य में योग्यता का अभाव है क्योंकि कुदाल से खेत की जुताई नहीं की जाती है। कुदाल के स्थान पर 'हल' का प्रयोग करने से वाक्य में वांछित योग्यता आ जाती है। तब वाक्य इस तरह हो जाएगा- किसान हल से खेत जोतता है।

4. निकटता – वाक्य के किसी शब्द को बोलते या लिखते समय अन्य शब्दों में परस्पर निकटता होना आवश्यक है। इसके अभाव में शब्दों से अभीष्ट अर्थ की प्राप्ति नहीं हो पाती है; जैसे – गाय ... घास ... चर रही है।

यहाँ 'गाय' शब्द बोलकर रुक जाने से मन में जिज्ञासा उठती है कि गाय 'दूध देती है' या दुधारू पशु है या कुछ और। इसी प्रकार 'घास' कहने के बाद रुक जाने से जिज्ञासा प्रकट होती है और हमें अर्थ के लिए अनुमान लगाना पड़ता है। अतः इस वाक्य को बिना रुके इस प्रकार लिखा या बोला जाना चाहिए- गाय घास चर रही है।

5. पदक्रम – वाक्यों में प्रयुक्त शब्दों को एक निश्चित क्रम में रखा जाता है ताकि वांछित अर्थ की अभिव्यक्ति हो। इसे ही पदक्रम कहते हैं। पदों (शब्द) के इस क्रम को बदल देने पर अर्थ की अभिव्यक्ति नहीं हो पाती है; जैसे –

- पटरी रेलगाड़ी पर दौड़ती है।
- हैं छात्रों को रहे पढा अध्यापक।

पदक्रम की दृष्टि से यह वाक्य उचित नहीं है। उचित पदक्रम में रखने पर इस तरह लिखा जाएगा

- रेलगाड़ी पटरी पर दौड़ती है।
- अध्यापक छात्रों को पढ़ा रहे हैं।

6. अन्वय – वाक्य अनेक शब्दों (पदों) का व्यवस्थित मेल होता है। यही व्यवस्थित रूप अन्वय कहलाता है।

वाक्य में प्रयुक्त पदों का लिंग, वचन, कारक, काल, पुरुष आदि के साथ यथोचित सामंजस्य होना चाहिए। इसके अभाव में वाक्य न व्याकरणिक दृष्टि से सही होते हैं और न वांछित अर्थ की अभिव्यक्ति कर पाते हैं; जैसे –

- **धोबी कपड़े धोती हैं।**
- **छात्राएँ सुंदर चित्र बनाते हैं।**
- **मज़दूर ने सवेरे-सवेरे काम पर जाते हैं।**

उचित अन्वय के साथ लिखने पर –

- **धोबी कपड़े धोते हैं।**
- **छात्राएँ सुंदर चित्र बनाती हैं।**
- **मज़दूर सवेरे-सवेरे काम पर जाते हैं।**

वाक्य भेद :
वाक्यों के वर्गीकरण के मुख्यतया दो आधार हैं –

1. **अर्थ के आधार पर**
2. **रचना के आधार प**

आप अपनी व्य्यकरण पाठ्य- पुस्तक से इस पाठ का अच्छे से अध्ययन करेंगे।
यह सारा कार्य अपनी व्याकरण लिखित पुस्तिका(Grammar Notebook) पर लिखिएं।